भारतीय परम्परा में दान का महत्व

डॉ0 चन्दन लाल गुप्ता

ऋग्वेद का दानसूक्त दान के महान् आदर्श को उपस्थित करते हुए कहता है कि देवताओं ने केवल क्षुधा की ही सृष्टि नहीं की अपितु मृत्यु की भी रचना की। जो व्यक्ति बिना दान दिये खाता है उसको भी मृत्यु के ही पास जाना पड़ता है। दाता का धन कभी क्षीण नहीं होता है। किन्तु जो दान नहीं देता है।

जो भूखे को अन्नदान से तृप्त करता है वह सर्वश्रेष्ठ दाता है। दान न देने वाले व्यक्ति की आवश्यकता पड़ने पर कभी कोई सहायता नहीं करता है। जिसका घर अन्न से परिपूर्ण है और वह घर आये हुए दुर्ब एवं अन्न की याचना करने वाले भिक्षुक को अन्नदान नहीं करता है घर पर आये हुए याचक को धनवान व्यक्ति के द्वारा धनदान अवश्य करना चाहिए। क्योंकि यह धन नश्वर है एवं इसी लोक में रह जाता है, परन्तु दान के द्वारा जो कीर्ति प्राप्त होती है, वह इहलोक एवं परलोक दोनों में मनुष्य की सहायक होती है।